उत्तर प्रदेश में हथकरघा बुनकरों की समस्याएं : वाराणसी जनपद का अध्ययन

चाँदनी सिंह,
शोधार्थी, समाज कार्य विभाग,
जैन विश्व भारती संस्थान,
लाडनूं, राजस्थान

डॉ० बिजेन्द्र प्रधान,
सह–आचार्य,समाज कार्य विभाग,
जैन विश्व भारती संस्थान,
लाडनूं, राजस्थान

सारांश

हथकरघा उद्योग भारत में एक बहुत ही प्राचीन एवं परम्परागत उद्योग हैं। भारत में हथकरघा क्षेत्र कृषि के बाद दूसरा सबसे बड़ा क्षेत्र है। यह उद्योग ग्रामीण तथा हरी क्षेत्रों के 43.31 लाख लोगों का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार उपलब्ध कराता है। औद्योगिकीकरण के पश्चात् हथकरघा के क्षेत्र में गिरावट आई है। हथकरघा क्षेत्र के द्वारा सामना की जा रही समस्या प्रकृति में लगातार है। इस उद्योग के सांस्कृतिक महत्व को बनायें रखने के लिए वर्तमान अध्ययन उत्तर प्रदेश के वाराणसी के हथकरघा बुनकरों की विभिन्न समस्याओं को समझने का एक प्रयास है। ये समस्याएं नई तकनीकि (पावरलूम) का हस्तक्षेप, पूंजीवादी नियंत्रण, कच्चे माल की ऊँची कीमत, मजदूरी में कमी आदि है। वर्तमान अध्ययन प्रकृति में वर्णनात्मक हैं। इस अध्ययन में आँकड़ो का संग्रहण प्रत्यक्ष साक्षात्कार विधि द्वारा साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से किया गया है। तत्पश्चात् आँकड़ो का विश्लेषण कर निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तावना

भारत में हथकरघा बुनाई कृषि के पश्चात् लोगो को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्रदान करने वाला प्रदूषण रहित विकेन्द्रीत कुटीर उद्योग है। हथकरघा बुनाई का हमारी अर्थव्यवस्था में एक अद्वितीय स्थान है। भारतीय हथकरघा उत्पादों की पहचान, प्राचीन काल से ही दोषरहित गुणवत्ता से की जाती रही है। इनमें राजस्थान एवं ओडिशा के बंधेज की रंगाई, वाराणसी के सिल्क, चन्देरी का मलमल, मछलीपट्टनम के छींटदार कपड़े, पंजाब के खेस, बड़ोदरा की पटोला साड़ियाँ आदि शामिल है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् से ही सरकार ने भिन्न क्षेत्रों एवं पावरलूम के अतिक्रमण से हथकरघा बुनकरों व इस उद्योग के सांस्कृतिक एवं परम्परागत धरोहर को संरक्षित करने के लिए कई सुरक्षोपाय किये है। हथकरघा अधिनियम, 1985 ने धोती, लुंगी, किनारी वाली साड़ियों जैसे 22 पारम्परिक वस्त्रों को विशिष्ट हथकरघा उत्पादन से अलग कर दिया तथा इन्हे पावरलूम क्षेत्र के दायरे से बाहर कर दिया। हथकरघा क्षेत्र दूसरा सबसे बड़ा रोजगार उपलब्ध कराने वाला क्षेत्र है। यह देश भर में 2.38 मिलियन करघों के साथ विभिन्न समुदायों के 4. 33 मिलियन लोगों को रोजगार प्रदान करता है। यह उद्योग देश के कपड़ा उत्पादन में लगभग 15 प्रतिशत योगदान देता है साथ ही निर्यात आय में भी योगदान करता है। पूरे विश्व में लगभग 95 प्रतिशत हाथ से बने हुए कपड़े भारत के ही होते है। इस उद्योग के गौरवशाली इतिहास तथा वर्तमान में परिपेक्ष्य में इस उद्योग की प्रासंगिकता को स्वीकार करते हुए सरकार हथकरघा उत्पादित

कपड़ो तथा बुनकरों के पुनरूत्थान के प्रति कटिबद्ध है। वर्तमान समय में हथकरघा समाज बहुत सारी समस्याओं का सामना कर रहे है जो कि दूसरे उद्योग नही कर रहें हैं यद्यपि सरकार द्वारा केन्द्र स्तर पर तथा राज्य स्तर पर हथकरघा उद्योग को पुनर्जीवित करने हेतु हथकरघा उद्योग की उत्पादकता एवं विपणन के विकास हेतु लगातार प्रयास किया जा रहा है। इसके पश्चात् भी यह देखा जा सकता है कि हथकरघा उद्योग विभिन्न क्षेत्रों जैसे उत्पादन, विपणन और वित्त के क्षेत्र में विभिन्न समस्याओं का सामना कर रहा है। फलस्वरूप इस उद्योग को लाभदायक बनाने के क्रम में, इस उद्योग की समस्याओं का पहचान किया जाना चाहिए तथा इस उद्योग की ताकत तथा कमजोरी का अनुमान लगाया जाना चाहिए। इस प्रकार इस अध्ययन का उद्येश्य हथकरघा क्षेत्र की समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित करना है और आगे एक उपयुक्त सुझाव देना है।

अध्ययन की आवष्यकता

हथकरघा उद्योग एक परम्परागत प्राचीन उद्योग है। देश में यह बहुत सारे लोगों के जीवकोपार्जन का स्रोत है। फिर भी यह उद्योग बहुत सारी समस्याओं का सामना कर रहा है। यह अध्ययन इन समस्याओं के निवारण हेतु सुझाव के साथ हथकरघा बुनकरों द्वारा सामना की जाने वाली कुछ मुख्य समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित करता है। ये समस्याएं है –

- **अपर्याप्त वित्त**
- **कच्चे माल की अपर्याप्त आपूर्ति**
- **धागे की खराब गुणवत्ता**
- **मास्टर बुनकर का दुर्व्यवहार**
- **डिजाइनों मे नवाचारों तथा रंगो के संयोजन की अनुपस्थिति**
- **करघों का उन्नयन में कमी**
- **बुनकर सदस्यों के बीच सहयोग का अभाव**

इस सन्दर्भ में यहाँ हथकरघा बुनकरों के द्वारा सामना की जा रही समस्याओं जैसे बुनकरों पर समस्याओं का प्रभाव, हथकरघा बुनकरों के जीवन स्तर की स्थिति के व्यापक अध्ययन की आवश्यकता है।

साहित्यों का पुनरावलोकन

1. **श्याम सुन्दरी, बी० (2007)** ने अपने अध्ययन में पाया कि हथकरघा उद्योग की मुख्य समस्या हथकरघा उत्पादों का उपभोक्ता की माँग और रूचि के अनुसार न होना तथा इस उद्योग में कम पूंजी निवेश को बताया है। अतः इस हेतु इन्होने सुझाव दिया कि वर्तमान में प्रचलित प्रौद्योगिकी का उपयोग कर हथकरघा उत्पादों को ग्राहको की माँगो के अनुरूप तैयार किया जाए तथा इस हेतु बुनकरों को पर्याप्त प्रशिक्षण दिया जाए।
2. **सिंह, अमृता एवं शैलजा डी० नायक (2009)** ने अपने अध्ययन में बताया कि बनारस के हथकरघा बुनकर जिन्हे यह व्यवसाय विरासत में मिला है। उनकी गरीब सामाजिक–आर्थिक स्थिति के कारण उनकी हालत दयनीय है। उनमें से अधिकांश मजदूर बुनकर है जो दस घंटे से अधिक मजदूरी करने के पश्चात भी न्यूनतम मजदूरी पाते है। अतः सरकार को इस और विशेष ध्यान देने की जरूरत है।
3. **गोस्वामी, डॉ० आर० व डॉ० आर० जैन (2014)** के अध्ययन का मुख्य उद्येश्य हथकरघा उद्योग की समस्याओं को जानना एवं आगे के लिए एक उपयुक्त

रणनीति का सुझाव देना था। इस अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष से ज्ञात होता है कि हथकरघा संगठन कच्चे माल के नियोजन, उत्पाद नियोजन एवं प्रचार कार्यक्रम की कोई व्यवस्थित रणनीति लागू नही कर रहे है।

4. **शा, तनुश्री (2015)** के अध्ययन का मुख्य उद्येश्य उत्तरप्रदेश के वाराणसी जिले के हथकरघा बुनकरों की विभिन्न समस्याओं का अध्ययन करना है। ये समस्याए नयी प्रौद्योगिकी का हस्तक्षेप (पावरलूम), पूँजीवादी नियंत्रण, मजदूरी में कमी, धागे की मूल्य में वृद्धि आदि है। ये सभी समस्याएँ हथकरघा उद्योग को समाप्ति की ओर धकेल रहे है। इस अध्ययन में मुख्यतः पाया गया कि युवापीढ़ी को पावरलूम उद्योग में रूचि है और वे हथकरघा स्थापित नही करना चाहते है। अतः इन्होने सुझाव दिया कि हथकरघा बुनकरों के उत्थान के लिए आवश्यक फंड का निर्धारण करना चाहिए।

5. **राव, डॉ० श्रीनिवास व डॉ० एन० श्रीधर (2017),** ने " प्राब्लम्स ऑफ हैण्डलूम वीवर्स इन आन्ध्र प्रदेश – अ स्टडी ऑफ कृष्णा डिस्ट्रिक्ट" विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन में ज्ञात हुआ कि हथकरघा उद्योग बहुत सारी समस्याओं से जूझ रहा है। जिसमे वित्तीय समस्या एवं विपणन समस्या मुख्य है। हथकरघा उद्योग की समस्याओं को दूर करने हेतु सरकार द्वारा बहुत सी योजनाओं का कार्यान्वयन किया जा रहा है परन्तु बुनकरों में जागरूकता की कमी होने के कारण यह योजनांए बुनकरों तक नही पहुंच पाती है।

अध्ययन का उद्येष्य

1. हथकरघा क्षेत्र का वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना ।
2. हथकरघा बुनकरों द्वारा सामना की जा रही समस्याओं का पता लगाना।
3. हथकरघा उद्योग के सुधार के लिए उपयुक्त सुझाव देना।

शोध विधि

आँकड़ो का स्रोत

यह अध्ययन प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोत पर आधारित है। इस अध्ययन में आँकड़ों का संग्रह 120 उत्तरदाताओं के साक्षात्कार अनुसूची द्वारा प्रत्यक्ष वैयक्तिक साक्षात्कार विधि का उपयोग करके किया गया है। द्वितीयक आँकड़ो का संग्रह विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं, लेखों, किताबों आदि के द्वारा किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश के वाराणसी जनपद के काशी विद्याापीठ व सेवापुरी ब्लॉक में किया गया है।

निदर्षन विधि – प्रस्तुत अध्ययन में उद्येश्यपूर्ण निदर्शन विधि का उपयोग किया गया है।

आँकड़ो का विष्लेषण व व्याख्या

आँकड़ो का संग्रह साक्षात्कार अनुसूची के प्रयोग द्वारा 120 उत्तरदाताओं से एकत्र किया गया है और आँकड़ों का विश्लेषण वित्तीय समस्याओं, उत्पादन समस्याओं, विपणन समस्याओं तथा स्वास्थ्य समस्याओं के आधार पर सामान्य तालिका द्वारा किया गया है।

1. वित्तीय समस्या

हथकरघा क्षेत्र उत्पाद की दृष्टि से प्रकृति में अत्यन्त ही विविधतापूर्ण उद्योग है। यह प्रक्रिया, उत्पाद और भौगोलिक बदलावों मे लचीलापन देने में सक्षम है। यह उद्योग विकेन्द्रीकृत है, तथा ग्रामीण एवं शहरी दोनो क्षेत्रों मे स्थित है। यह उद्योग तभी जीवित रह सकता है जब सरकार चरम परिस्थितियों में काम करने वाले भारत के बहुत से बुनकरों को समान पुनर्वास सुविधा प्रदान करे तथा बुनकर काम की गुणवत्ता बनाये रखे। केन्द्र व राज्य सरकारें हथकरघा बुनकरों, बुनकर सहकारी समीतियों को शेयर पूंजी को मजबूत करने, समीतियों के प्रबन्धन में सुधार हेतु और करघों के आधुनिकरण के लिए सहायता प्रदान करती है। फिर भी समीतियाँ बुनकरों की आर्थिक स्थिति को मजबूत नही कर पाती है। क्योंकि वे बुनकर लिये गये ऋण को समय से चुकाने में समर्थ नही होते है और इस प्रकार बुनकर वित्तीय कमी के कारण हथकरघा उत्पादों का बेहतर उत्पादन एवं विपणन नही कर पाते है।

सारणी संख्या – 1

वित्तीय समस्या

वित्तीय समस्या	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिषत (%)
हां	94	78.33
नही	26	21.66
कुल	120	100

सारणी संख्या – 1 के अनुसार अधिकांश उत्तरदाता के पास वित्तीय समस्या है। 120 उत्तरदाताओं मे से 94 (78.3 %) बुनकर वित्तीय समस्या से जूझ रहे है तथा बहुत कम उत्तरदाता 26 (21.6 %) वित्तीय समस्याओं का सामना नही कर रहे है।

2. उत्पादन समस्या

हथकरघा उद्योग में संलग्न बुनकरों की सबसे प्रमुख समस्या कच्चे माल (धागा, रंग व उससे जुड़े पदार्थों) की अपर्याप्त तथा अनियमित आपूर्ति की समस्या है। क्योंकि हथकरघा उद्योग में संलग्न बुनकरों को सही समय व सही कीमत पर कच्चा माल प्राप्त नही हो पाता है। बुनकर सहकारी समीतियों द्वारा कच्चे माल की अपर्याप्त आपूर्ति हो पाती है। इस प्रकार कच्चे माल की अनुलब्धता के कारण बुनकरों का कार्य प्रभावित होगा।

धागों की खराब गुणवत्ता – धागों की खराब गुणवत्ता के कारण, उत्पादन कम गुणवत्ता का होता है।

कच्चे माल की कमी – कच्चे माल की कमी के कारण धागों की पर्याप्त आपूर्ति नही हो पाती है।

करघों के उन्नयन में कमी कम उत्पादन का एक प्रमुख कारण है।

नये–नये डिजाइनों का अप्रभावी कार्यान्वयन – इस कारण से बुनकर ग्राहकों की आवश्यकताओं को पूरा नही कर पाते है।

सारणी संख्या – 2

उत्पादन समस्या

उत्पादन समस्या	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिषत (%)
हां	108	90
नही	12	10
कुल	120	100

सारणी संख्या – 2 से प्राप्त निष्कर्ष के अनुसार अधिकांश उत्तरदाता के पास उत्पादन की भी समस्या है। 120 उत्तरदाताओं मे से 108 (90 **%**) बुनकर उत्पादन की समस्याओं का सामना कर रहे है जबकि बहुत कम 12 (10 **%**) उत्तरदाता समस्याओं का सामना नही करते है।

3. **विपणन समस्या**

घरेलु बाजारों में हथकरघा के मूल्यों में आयी कमी के कई कारण है। इसका एक व्यापक कारण हथकरघा, वर्तमान प्रचलित बाजार तथा उपभोक्ताओ की रूचियों की अनदेखी करता है। विपणन समस्या एक मुख्य समस्या है जो कि हथकरघा उद्योग के विकास हेतु उपयुक्त नीति में बांधा उत्पन्न करती हैं।

हथकरघा उत्पादों का अत्यधिक मूल्य एवं आधुनिक डिजाइनों का न होना एवं परम्परागत हथकरघा का उपयोग कर हथकरघा उत्पादों को उत्पादित करना और उपयुक्त विपणन प्रणाली का न होना भी विपणन समस्या एक कारण है।

सारणी संख्या – 3

विपणन समस्या

विपणन समस्या	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिषत (%)
हां	111	92.5
नही	9	7.5
कुल	120	100

सारणी संख्या – 3 के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि अधिकांशतः उत्तरदाताओं को विपणन की समस्या हैं। कुल 120 उत्तरदाताओं मे से 111 (92.5 **%**) बुनकर विपणन सम्बन्धी से जूझ रहे है। जबकि केवल 9 (7.5 **%**) उत्तरदाताओं को विपणन सम्बन्धी कोई भी समस्या नही है।

4. **स्वास्थ्य समस्या**

यह सर्वविदित है कि स्वास्थ्य ही धन है। जहां व्यक्ति सभी प्रकार की शारीरिक एवं मानसिक बीमारियों में मुक्त होता है। स्वास्थ्य बेहतर उत्पादकता एवं उत्पादन के लिए आवश्यक शर्तों में से एक है। हथकरघा उद्योग में हथकरघा बुनकरों के कई प्रकार की व्यवसायिक स्वास्थ्य समस्याओं से ग्रस्त होना बहुत आम बात है। यह समस्याएं गम्भीर और तीव्र तब और हो जाती है जब बुनकर वृद्धावस्था को प्राप्त होते।

हथकरघा बुनकरों से जुड़ी कुछ समस्याओं में शामिल है– खराब दृष्टि , जोड़ो का दर्द, घुटने का दर्द, पीठ का दर्द, दिल की बीमारियां, फेफड़ों की बीमारियां, उच्च एवं निम्न रक्तचाप व फाइलेरिया आदि। खराब समस्याओं के कारण ही अधिकांश बुनकर अपनी उम्र से अधिक उम्र के दिखाई देते है।

सारणी संख्या – 4

स्वास्थ्य समस्या

स्वास्थ्य समस्या	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिषत (%)
कमजोर दृष्टि	39	32.5
पीठ दर्द	51	42.5
घुटनो/जोड़ो का दर्द	22	18.33
फेफड़ो की समस्या	8	6.66
कुल	120	100

सारणी संख्या – 4 से प्राप्त निष्कर्षो के अनुसार 120 उत्तरदाताओं के से अधिकांश 51 (42.5 **%**) उत्तरदाता पीठ दर्द की समस्या से जूझ रहे है। सबसे कम उत्तरदाता में 08 (6.66 **%**) को फेफड़ों की समस्या है। उपरोक्त सारणी के अनुसार 39 (32.5 **%**) उत्तरदाता कमजोर दृष्टि की समस्या से तथा 22 (18.33 **%**) उत्तरदाता घुटनों व जोड़ो की समस्या का सामना कर रहे है।

5. मजदूरी की समस्या

हथकरघा क्षेत्र एक श्रम प्रधान क्षेत्र है जहाँ पर हथकरघा बुनकरों की मजदूरी संतोषजनक होनी चाहिए। सामान्य तौर पर धारणा है कि श्रम गहन क्षेत्र, पूंजी गहन क्षेत्रों की तुलना में कम मजदूरी प्राप्त करते हैं। हथकरघा क्षेत्र भी इससे अछूता नही हैं। हथकरघा बुनकरों को उनकी उत्पादन की क्षमता के अनुरूप कम मजदूरी मिलता है। सामान्य तौर पर एक हथकरघा बुनकर को एक साड़ी बुनने के लिए 400 – 600 रू० ही प्राप्त होते है। जबकि एक साड़ी बनाने के लिए 4 से 5 दिन का समय लगता हैं। बुनकरों की एक दिन की सामान्यतः औसत आय 100 – 150 रू० ही है।

सारणी संख्या – 5

मजदूरी समस्या

बुनकरों के एक दिन की औसत आय	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिषत (%)
100 – 200 रू०	68	56.66
201 – 300 रू०	38	31.66
301 से या उससे अधिक	14	11.67
कुल	120	100

सारणी संख्या – 5 द्वारा प्राप्त निष्कर्षों के अनुसार, 120 उत्तदाताओं में से अधिकांश बुनकर 68 (56.66 **%**) उत्तरदाता 100 – 150 रू० के बीच की मजदूरी अपने कार्य के पश्चात प्राप्त करते हैं जबकि 38 (31.66 **%**) उत्तरदाता 200 – 300 रू० तथा सबसे कम 14 (11.67 **%**) 301 रू० या उससे अधिक प्रतिदिन की मजदूरी के रूप में प्राप्त करते है।

सुझाव

हथकरघा उद्योग को पुनर्जीवित करने हेतु बुनकरों को अपने दृष्टिकोण को पारम्परिक से आधुनिक में बदलना होगा। बाजार की तथा ग्राहको के अपेक्षाओं के अनुरूप डिजाइनों में परिवर्तन, स्थानीय ब्रांड, छवि का निर्माण, उत्पादों में गुणवत्ता, उत्पाद नवाचार एवं विपणन रणनीतिओं में आधुनिक तकनीकि का उपयोग घरेलु और अन्तर्राष्ट्रिय बाजार को बढ़ाता है। उत्पादन गतिविधिओं में प्रौद्योगिकी का उन्नयन, विशिष्ट कार्य घंटों का रखरखाव, उत्पादन के बुनियादी ढांचे का विकास एवं कौशल विकास उत्पादन के साथ ही गुणवत्ता में सुधार करता है। केन्द्र या राज्य सरकारों को कौशल विकास कार्यक्रमों को लागू करना, तकनीकि परिवर्तनो पर बुनकरों में जागरूकता उत्पन्न करना, जो हथकरघा उद्योग के लिए उपयुक्त है, के लिए वित्तीय सहायता, प्रौद्योगिकी का उन्नयन, ऋण सुविधाएं प्रदान करने के लिए बेहतर प्रणाली, विपणन सुविधाओं का विकास, युवाओं को प्रोफेशनल के रूप में हथकरघा के लिए विष्वास सुनिश्चित कराने के लिए रणनीति को लागू करना चाहिए।

निष्कर्ष

हथकरघा बुनाई राज्य के साथ ही राष्ट्र के विकास की प्रक्रिया में एक सक्रिय भूमिका निभाता है। इस क्षेत्र को बुनकरों के पारम्परिक कौशल के कारण महत्वपूर्ण माना गया है। जो स्थानीय लोगों की जरूरतों और मांगों को पूरा करते है। आधुनिक अर्थव्यवस्था में हथकरघा उद्योग की अलग ही क्षमता है। यह सरल एवं उपयुक्त तकनीकि से जुड़ा है। विश्व, जो कि स्वच्छ हवा व पानी की मांग कर रहा है वहां हथकरघा उद्योग अच्छी तरह से अनुकूल हैं क्योंकि यह प्रकृति में पर्यावरण के अनुकूल हैं। हथकरघा क्षेत्र के पास एक आत्मनिर्भर तंत्र है। इस उद्योग की कौशल व क्षमता की विरासत किसी भी आधुनिक प्रशिक्षण व शैक्षिक संस्था दायरे और पहुंच से परे हैं। व्यवसाय के रूप में हथकरघा बुनाई को लेने के लिए सभी प्रकार के समुदायों के लिए पर्याप्त लचीलापन है।

हथरकरघा प्रतिविधिओं के विकास एवं वृद्धि के लिए इस क्षेत्र का दायरा बढ़ाने के लिए कच्चे माल, वित्त, विपणन सुविधाओं और अन्य आवश्यकताओं को प्रदान करने के लिए आवश्यक उपाय किये जाने चाहिए। इस क्षेत्र की पूर्ण क्षमता का अहसास कराने के लिए, विकास में बाधा डालने वाली बाधांओ को दूर किया जाना चाहिए। केन्द्र और राज्य दोनों सरकारों को सतत् विकास प्राप्त करने में हथकरघा की भूमिका का मान्यता देनी चाहिए।

सन्दर्भ सूची

1. Renthlei, Lalmalsawmi (2019), " Socio-economic condition of handloom weavers : A case study of weavers in Zuangtui cluster, Aizawl, Mizoram," Senhri Journal of Multidisciplinary Studies, vol. 4 No. 1, Pp. 54-62
2. श्याम सुन्दरी, बी० (2007), "हथकरघा विपणन – एक नवीन दृष्टि, योजना अंक –4 पृ० 11–19
3. Singh, Amrita and Shailja, D. Naik (2019), "Status of Banaras weavers : A profile",Karnataka J. Agric. Sci.22 (2) . (408-411)
4. Goswami, R and R. Jain 2014, "Strategy for sustainable development of handloom industry," Global journal of finance and management, vol. 6, No 2, Pp 93-98
5. Tanushree, Sha. (2015), "A study of present situation of the traditional handloom weavers of Varanasi, U.P. India", International research journal of social science, vol. 4 (3), 48-53
6. Rao, Dr. Srinivas and Dr. M. Sridhar (2017), "Problem of handloom weavers in Andhra Pradesh : A study of Krishna District," International Journal of Humanities & Social Science